International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 12, Dec- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बदलते लिंगानुपात का समाजशास्त्रीय अध्ययन

ऋतु जैन

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र,

महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिल्सी, बदायूं

सार

लिंगानुपात को किसी भी जनसंख्या में महिलाओं की संख्या के सापेक्ष पुरुषों की संख्या के रूप में परिभाषित किया गया है। असमान लिंगानुपात के सामाजिक कारण और परिणाम होते हैं, जो परिवार निर्माण, विवाह की गुणवत्ता और सामान्य रूप से लैंगिक असमानता से गहराई से जुड़े होते हैं। विद्वानों ने सामाजिक आदान-प्रदान, विकासवादी मनोविज्ञान और टोकनवाद के सिद्धांतों के माध्यम से असमान लिंग अनुपात के परिणामों की भविष्यवाणी की है। इसके अलावा, दुनिया भर में असमान लिंग अनुपात के प्रभावों के उदाहरण स्पष्ट हैं, जिनमें देरी से या छोड़ी गई शादी और वैवाहिक मोहभंग शामिल हैं। भविष्य के शोध में असमान लिंग अनुपात के परिणामों, उनके कारणों और नीतिगत हस्तक्षेपों की जांच की जानी चाहिए।

मुख्य शब्द: *लिंगानुपात, जनसंख्या, समाजशास्त्रीय*

प्रस्तावना

किसी समाज में पुरुषों और महिलाओं की संख्या के बीच के अनुपात को लिंग अनुपात कहा जाता है। यह अनुपात स्थिर नहीं है बल्कि जैविक, सामाजिक, तकनीकी, सांस्कृतिक और आर्थिक शक्तियों द्वारा आकार दिया गया है। और बदले में लिंग अनुपात का समाज, जनसांख्यिकी और अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है। इस प्रविष्टि में हम दुनिया भर में लिंग अनुपात की भिन्नता और परिवर्तनों का एक सिंहावलोकन प्रदान करते हैं। हम अध्ययन करते हैं कि यह जन्म से लेकर अंतिम जीवन तक कैसे बदलता है; वे ताकतें जो पुरुषों और महिलाओं के अनुपात को बदल देती हैं। कई लोग दृढ़तापूर्वक तर्क देते हैं कि 'लिंग' और 'लिंग' शब्दों का परस्पर उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। हालाँकि, इस संदर्भ में हमने यहाँ एक अपवाद बनाने का निर्णय लिया है: हम 'लिंग अनुपात' की बात करते हैं क्योंकि यह स्थापित शब्द है और यह उन सभी लोगों की मदद करेगा जो इस विषय के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं और इस शब्द

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 12, Dec- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

को खोजना चाहते हैं। लेकिन हम 'लिंगानुपात' की भी बात करते हैं क्योंकि यह यकीनन अधिक सटीक शब्द है और अकादमिक साहित्य में इसका उपयोग तेजी से हो रहा है।

- लिंग संरचना में परिवर्तन सबसे बुनियादी जनसांख्यिकीय लक्षणों में से एक है, क्योंकि वे विभिन्न तरीकों से समाज के अंतर्निहित सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक पैटर्न को दर्शाते हैं।
- यह किसी भी विशिष्ट उदाहरण पर पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता के स्तर को निर्धारित करने के लिए एक महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय संकेतक है।
- यह मृत्यु दर, प्रवासन, वैवाहिक स्थिति, आर्थिक विशेषताओं आदि सहित अन्य जनसांख्यिकीय डेटा की योजना और विश्लेषण के अन्य रूपों के लिए भी उपयोगी है।
- भारत में लिंगानुपात (Sex Ratio in India in Hindi) एक अनुपात है जिसका उपयोग लिंग संरचना को इंगित करने के लिए किया जाता है।
- लिंग अनुपात को "प्रति 1000 पुरुषों पर जनसंख्या में महिलाओं की संख्या" के रूप में परिभाषित किया गया है। नतीजतन, 1000 का लिंग अनुपात कुल लैंगिक समानता को दर्शाता है।
- 1000 से अधिक के अनुपात पुरुषों की तुलना में महिलाओं की अधिकता को प्रदर्शित करते हैं; 1000 से नीचे के लोग महिलाओं की कमी को प्रदर्शित करते हैं।

भारत में लिंगानुपात के प्रकार

अधिकांश प्रजातियों के लिंगानुपात में जनसंख्या की आयु के आधार पर उतार-चढ़ाव होता है। इसे आमतौर पर चार वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है : (ये वर्गीकरण परिभाषित सीमाओं की कमी के कारण व्यक्तिपरक हो सकते हैं)

1. **प्राथमिक लिंगानुपात** फर्टलाइज़ेशन के अनुपात को संदर्भित करता है।
2. **द्वितीयक लिंगानुपात** जन्म अनुपात पर है
3. **तृतीयक लिंगानुपात** –यौन विकसित जीवों में
4. **चतुर्धातुक लिंगानुपात** प्रजनन के बाद के जीवों में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 12, Dec- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्राथमिक लिंगानुपात	माध्यमिक लिंगानुपात	तृतीयक लिंगानुपात
गर्भाधान के समय के अनुपात को प्राथमिक लिंग अनुपात के रूप में जाना जाता है। इसकी गणना पुरुष और महिला गर्भपात, गर्भपात और मृत जन्म दर के साथ-साथ उनके जीवित जन्म डेटा का उपयोग करके की जाती है।	जन्म के समय पुरुष-महिला अनुपात को द्वितीयक लिंग अनुपात के रूप में जाना जाता है। यह मूल रूप से जनसंख्या स्तर पर स्थिर है।	तृतीयक लिंगानुपात 20 वर्ष के आयु वर्ग में पाए जाने वाले परिपक्व जीवों का अनुपात है। ज्यादातर मामलों में नर मादाओं से आगे निकल जाते हैं।

भारत में लिंगानुपात

- 2011 की जनगणना के अनुसार भारत का लिंगानुपात (Sex Ratio in India in Hindi) 943 है।
- यानी हर 1000 पुरुषों पर 943 महिलाएं हैं।
- अनुपातहीन लिंगानुपात जो पुरुषों के पक्ष में है, एक खतरनाक संकेत है क्योंकि यह महिला भ्रूण मृत्यु दर की उच्च संभावना की भविष्यवाणी करता है।
- यह उन राज्यों में एक महत्वपूर्ण मुद्दा है जहां माता-पिता सक्रिय रूप से अपने बच्चों के लिंग का चयन करते हैं और लड़कियों को उनके जन्म से पहले ही मार दिया जाता है।
- हरियाणा में भारत का सबसे कम लिंगानुपात है, जिसमें प्रति 1000 लड़कों पर 879 महिलाएं हैं।
- घटते लिंगानुपात देश की भावी महिला आबादी के लिए खतरा हैं।
- लिंग अनुपात की गणना लिंग अनुपात = (महिलाओं की संख्या / पुरुषों की संख्या) x 1000 के रूप में की जाती है।

भारत में लिंगानुपात के रुझान

संयुक्त राष्ट्र (विश्व जनसंख्या संभावना 2015) की रिपोर्ट के अनुसार-

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 12, Dec- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

- भारत की कुल जनसंख्या का लिंगानुपात 2016 में प्रति 100 महिलाओं पर18 पुरुष है। भारत में, 717,100,970 पुरुष (717.10 मिलियन) और 662,903,415 महिलाएं (662.90 मिलियन) हैं।

- महिलाओं की आबादी 04 प्रतिशत है, जबकि पुरुषों की संख्या 51.96 प्रतिशत है। 54.20 मिलियन पुरुषों के साथ, भारत में सबसे अधिक पुरुष आबादी है।

- भारत 201 देशों और क्षेत्रों में से 189वें स्थान पर है।

उद्देश्य

1. लिंगानुपात का समाजशास्त्रीय

2. लिंग अनुपात का समाज, जनसांख्यिकी और अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है।

जनसंख्या में पुरुष और महिला का कितना हिस्सा है?

लिंगानुपात - जनसंख्या में महिला हिस्सेदारी - दुनिया भर में भिन्न-भिन्न है। और वैश्विक स्तर पर 2016 में महिलाओं की हिस्सेदारी सिर्फ 50% से कम थी।

ऐसे तीन कारण हैं जिनकी वजह से जनसंख्या का लिंगानुपात अलग-अलग होता है और शायद ही कभी बराबर होता है:

- महिलाओं और पुरुषों के लिए मृत्यु दर और जीवन प्रत्याशा में अंतर। महिलाएं, औसतन, पुरुषों की तुलना में अधिक समय तक जीवित रहती हैं। इसका मतलब यह है कि बाकी सब समान होने पर, हम उम्मीद करेंगे कि महिलाएं कुल आबादी के आधे से थोड़ा अधिक होंगी।

- जन्म के समय लिंगानुपात समान नहीं होता है। सभी देशों में, लड़कियों की तुलना में पुरुषों की संख्या अधिक है (जैसा कि हम नीचे देखेंगे, इसकी सीमा देश के अनुसार अलग-अलग होती है)। इसका मतलब यह है कि बाकी सब समान होने पर, हम उम्मीद करेंगे कि पुरुष कुल आबादी के आधे से थोड़ा अधिक होंगे।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 12, Dec- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

- प्रवासन जनसंख्या के लिंगानुपात को भी प्रभावित कर सकता है। यदि कुछ देशों में आयातित पुरुष-प्रधान श्रम की एक महत्वपूर्ण मात्रा है, बाकी सभी समान हैं, तो हम उम्मीद करेंगे कि पुरुष कुल आबादी के आधे से अधिक होंगे।

इन कारकों का परिमाण और संतुलन कुल जनसंख्या के लिंगानुपात को निर्धारित करता है।

मानचित्र में हम जनसंख्या का लिंगानुपात देखते हैं: इसे कुल जनसंख्या के प्रतिशत के रूप में दिखाया गया है जो कि महिला है। 50 प्रतिशत से अधिक देशों (नीले रंग में दिखाया गया है) में पुरुषों की तुलना में महिलाएं अधिक हैं; 50 प्रतिशत से कम (लाल रंग में दिखाया गया) वालों में महिलाएँ कम हैं।

अधिकांश देशों में जनसंख्या में महिलाओं की हिस्सेदारी 49 से 51 प्रतिशत (समानता के एक प्रतिशत बिंदु के भीतर) के बीच है।

हालाँकि कुछ उल्लेखनीय आउटलेर हैं:

- दक्षिण और पूर्वी एशिया के कई देशों में - विशेष रूप से भारत और चीन में - पुरुषों की तुलना में महिलाएं काफी कम हैं। ये ऐसे देश हैं जहां जन्म के समय लिंगानुपात में बड़ा अंतर है।

- मध्य पूर्व के कई देशों में महिलाओं की तुलना में पुरुषों की संख्या अधिक है: ओमान में, महिलाओं की संख्या 3 से 1 से अधिक है; संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में यह लगभग 4 से 1 है। यदि हम देखें कि यह समय के साथ कैसे बदल गया है (इसे देखने के लिए देश पर क्लिक करें), तो हम देखते हैं कि जनसंख्या में महिलाओं की हिस्सेदारी दशकों पहले की समानता के अनुपात से घट गई है। इसका प्राथमिक कारण एक बड़ा पुरुष प्रवासी स्टॉक है: 2016 में, ओमान की 45 प्रतिशत और संयुक्त अरब अमीरात की 88 प्रतिशत आबादी आप्रवासन से थी। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट है कि ओमान और संयुक्त अरब अमीरात में क्रमशः केवल 16 और 25 प्रतिशत अंतरराष्ट्रीय प्रवासी थे। , महिला थीं.

- पूर्वी यूरोप में पुरुषों की तुलना में महिलाएं काफी अधिक हैं। पूर्वी यूरोप की आबादी में पुरुषों और महिलाओं के बीच जीवन प्रत्याशा में सबसे बड़ा अंतर है: उदाहरण के लिए, 2015 में रूस में, पुरुषों के लिए जन्म के समय जीवन प्रत्याशा केवल 64 वर्ष के आसपास थी, जबकि महिलाओं के लिए लगभग 75 वर्ष थी।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 12, Dec- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्वाभाविक रूप से जन्म पुरुष-पक्षपाती होने की उम्मीद क्यों की जाती है?

अधिकांश देशों में, प्रति 100 महिलाओं पर लगभग 105 पुरुष हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का अनुमान है कि जन्म के समय 'अपेक्षित' लिंगानुपात: लिंग भेदभाव या हस्तक्षेप के अभाव में हम उम्मीद करेंगे कि प्रति 100 लड़कियों पर लगभग 105 लड़के पैदा होंगे, हालांकि यह भिन्न-भिन्न हो सकता है। प्रति 100 लड़कियों पर 103 से 107 लड़के। ऐसा क्यों है?

अपनी तरह के सबसे व्यापक अध्ययन में, पांच अलग-अलग तरीकों से गर्भधारण से लेकर जन्म तक लिंग अनुपात के प्रक्षेपवक्र की निगरानी की गई।

इसने गर्भावस्था के सभी चरणों में लिंग अनुपात पर उपलब्ध सबसे बड़ा डेटासेट तैयार किया।

इस अध्ययन का एक मुख्य परिणाम यह था कि गर्भधारण के समय लिंगानुपात बराबर होता है: गर्भधारण करने वाले पुरुषों और महिलाओं की संख्या में कोई अंतर नहीं होता है। जन्म लगातार पुरुष-पक्षपाती होने के लिए, गर्भावस्था के माध्यम से गर्भपात की संभावना में लिंग अंतर होना चाहिए।

अध्ययन में पाया गया कि यद्यपि गर्भावस्था के दौरान गर्भपात की संभावना लिंग के आधार पर भिन्न होती है, पूरी अवधि में महिला मृत्यु दर पुरुष मृत्यु दर से थोड़ी अधिक होती है:

- इस बात की अधिक संभावना है कि गुणसूत्र संबंधी असामान्यताओं वाला भ्रूण नर है - गर्भावस्था के पहले सप्ताह में, अधिक पुरुष मृत्यु दर का मतलब है कि गर्भावस्था महिला-पक्षपाती है;
- गर्भावस्था के अगले 10-15 सप्ताह में महिला मृत्यु दर अधिक होती है, जिससे पुरुषों के पक्ष में अनुपात बढ़ जाता है;
- सप्ताह 20 के आसपास पुरुष और महिला मृत्यु दर लगभग बराबर होती है;
- गर्भावस्था के 28-35 सप्ताह के बीच, पुरुष मृत्यु दर अधिक होती है।

कुल मिलाकर, जन्म के समय पुरुष-पक्षपातपूर्ण लिंगानुपात का परिणाम है।

कुछ देशों में लिंगानुपात अपेक्षित लिंगानुपात से अधिक विषम है

जन्मों में कुछ पुरुष-पूर्वाग्रह की हम अपेक्षा करते हैं, क्योंकि माता-पिता या समाज के माध्यम से व्यापक रूप से कोई जानबूझकर लिंग चयन नहीं किया जाता है। हालाँकि, आज दुनिया में कुछ प्रमुख कारक हैं:

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 12, Dec- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

चीन, भारत, वियतनाम, पाकिस्तान और अज़रबैजान सहित देशों में यह अनुपात बहुत विषम है। यहां यह संभावना है कि जानबूझकर चयन प्रथाएं उच्च लिंगानुपात के हिस्से की व्याख्या करती हैं जैसा कि हम यहां खोज रहे हैं।

लिंगानुपात जन्म क्रम के अनुसार बदलता रहता है

अधिकांश देशों में जन्म के समय लिंगानुपात प्रत्येक 100 लड़कियों पर 105 लड़कों के जन्म की अपेक्षित सीमा के आसपास है। इसके कुछ अपवाद हैं: ऐसे देश हैं - विशेष रूप से एशिया में - जहां लिंग अनुपात पुरुषों के पक्ष में अत्यधिक विषम है।

कुछ देशों में बेटे के लिए प्राथमिकता उपरोक्त आंकड़ों में जन्म के समय समग्र लिंगानुपात में देखी जाती है। लेकिन यह पूर्वाग्रह तब और भी मजबूत हो जाता है जब हम देखते हैं कि यह अनुपात बच्चों के जन्म क्रम से कैसे प्रभावित होता है।

इस विज़ुअलाइज़ेशन में हम भारत के मामले को देखते हैं और एक परिवार में पहले बच्चे से लेकर दूसरे, तीसरे, चौथे और पांचवें जन्मे बच्चे तक लिंग अनुपात कैसे बदलता है। यह आर्थिक सर्वेक्षण 20185 से अनुकूलित है और भारत में डीएचएस और राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आंकड़ों पर आधारित है। यह इस डेटा को दो मामलों में प्रस्तुत करता है:

- जब बच्चा जन्म लेने वाला आखिरी बच्चा न हो (अर्थात माता-पिता के बाद में अतिरिक्त बच्चे हों)
- जब बच्चा परिवार में पैदा होने वाला आखिरी बच्चा होता है (यानी माता-पिता उसके बाद बच्चे पैदा करना बंद कर देते हैं)

आइए सबसे पहले शीर्ष पंक्ति पर ध्यान केंद्रित करें, जो संपूर्ण भारत के लिए डेटा प्रस्तुत करती है। बायीं ओर हमारे पास जन्म के समय लिंगानुपात है जब बच्चा अंतिम नहीं होता है। पहले बच्चों के लिए, लिंग अनुपात बहुत करीब है जो हम 'स्वाभाविक रूप से' उम्मीद करते हैं: प्रति 100 लड़कियों पर लगभग 105 लड़कों का अनुपात। लेकिन हम देखते हैं कि दूसरे, तीसरे, चौथे और पांचवें जन्म वाले बच्चों के लिए यह अनुपात लड़कियों की ओर झुका हुआ है। फिर से याद रखें कि ऐसा तब होता है जब यह आखिरी बच्चा नहीं होता है यानी माता-पिता दूसरा बच्चा पैदा कर लेते हैं। दूसरे शब्दों में, यह हमें दिखाता है कि जब एक लड़की का जन्म होता है, तो माता-पिता को दूसरा बच्चा पैदा करने की अधिक संभावना होती है। यह इस बात का प्रमाण है कि माता-पिता तब तक बच्चे पैदा करते रहते हैं जब तक उन्हें पुत्र प्राप्त नहीं हो जाता।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 12, Dec- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इसकी तुलना दाहिनी ओर से करें जहां हम लिंगानुपात देखते हैं जब बच्चा आखिरी होता है। ये अनुपात लड़कों की ओर अधिक झुका हुआ है। जिन माता-पिता की पहली संतान बेटा है, उनके बच्चे पैदा करना बंद करने की संभावना अधिक होती है। यहां लिंगानुपात प्रति 100 लड़कियों पर 182 लड़कों का है। यह जन्म क्रम में सुसंगत है: चाहे वह दूसरा, तीसरा, चौथा या पाँचवाँ बच्चा हो, एक परिवार में लड़का होने पर बच्चे पैदा करना बंद करने की अधिक संभावना होती है।

संयुक्त रूप से हम भारत में बेटे के लिए एक मजबूत प्राथमिकता देखते हैं: जब बच्चा लड़की होता है तो माता-पिता द्वारा अधिक बच्चे पैदा करने की संभावना अधिक होती है और जब उनके पास लड़का होता है तो उनके बच्चे पैदा करना बंद करने की अधिक संभावना होती है।

अब इन अनुपातों की तुलना नीचे दूसरी पंक्ति में इंडोनेशिया से करें। यहां लिंग अनुपात 105 के अपेक्षित अनुपात से बहुत अधिक भिन्न नहीं है, और जब बच्चे का जन्म अंतिम होता है या नहीं होता है तो कोई स्पष्ट अंतर नहीं होता है। माता-पिता की पसंद बेटे या बेटी के लिए मजबूत प्राथमिकता का संकेत नहीं देती है।

तीसरी पंक्ति में हम देखते हैं कि भारत के विभिन्न राज्यों में बेटे की पसंद में बड़ा अंतर है। आंकड़ों से पता चलता है कि ऐसे कई राज्य हैं जहां बेटे को 'कमजोर' और 'मजबूत' प्राथमिकता दी जाती है।

निष्कर्ष

जन्म के समय लिंगानुपात: प्रति 100 महिलाओं पर जन्म लेने वाले पुरुषों की संख्या। जन्म के समय 'अपेक्षित' लिंग अनुपात: जन्म के समय अपेक्षित लिंग अनुपात पूरी तरह से समान नहीं है: सामान्य परिस्थितियों में हम उम्मीद करेंगे कि लड़कियों की तुलना में लड़कों का जन्म थोड़ा अधिक होगा। इसका मतलब यह है कि सभी देशों में जन्म पुरुष-पक्षपाती होता है। अपेक्षित लिंगानुपात प्रति 100 लड़कियों पर लगभग 105 लड़कों का जन्म है। यह विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा रिपोर्ट किया गया 'प्राकृतिक' लिंगानुपात है। इस अपेक्षित अनुपात में कुछ परिवर्तनशीलता हो सकती है, प्रति 100 लड़कियों पर लगभग 102 से 107 लड़कों तक। इसलिए जन्म के समय पुरुष-पक्षपाती लिंग अनुपात होना आवश्यक रूप से लिंग भेदभाव का प्रतिनिधित्व नहीं करता है, हालांकि बहुत अधिक विषम अनुपात (प्रति 100 लड़कियों पर 107 लड़कों से अधिक) लिंग चयन प्रथाओं के उपयोग का सुझाव देता है। प्रसवपूर्व लिंग चयन: प्रसवपूर्व लिंग चयन प्रथाएं वे हैं जिनका उपयोग किसी महिला की गर्भावस्था के दौरान लिंग के आधार पर भेदभाव करने के लिए किया जाता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 12, Dec- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संदर्भ

1. रेज़गोडा, जे., और क्रिसलर, जे.सी. (2002)। लिंग और लिंग की परिभाषाएँ: अर्थ की सूक्ष्मताएँ। सेक्स भूमिकाएँ, 43(7-8), 553-569।

2. संयुक्त राष्ट्र, आर्थिक और सामाजिक मामलों का विभाग, जनसंख्या प्रभाग (2013)। अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन रिपोर्ट 2013 (ST/ESA/SER.A/403)।

3. ऑर्ज़ैक, एस.एच., स्टबलफ़ील्ड, जे.डब्ल्यू., अकमेव, वी.आर., कोल्स, पी., मुन्ने, एस., शोल, टी., ... और ज़करमैन, जे.ई. (2015)। गर्भधारण से जन्म तक मानव लिंगानुपात। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की कार्यवाही, 112(16), E2102-E2111।

4. जेटली, ए. (2011)। आर्थिक सर्वेक्षण 2017-18: खंड I, अध्याय 7: लिंग और पुत्र मेटा-वरीयता: क्या विकास स्वयं एक मारक है?

5. गेलैटली, सी., और पेट्री, एम. (2016)। भारत में पहली और दूसरी जन्मी बेटियों के बाद प्रसवपूर्व लिंग चयन और कन्या शिशु मृत्यु दर अधिक आम है। जर्नल ऑफ एपिडेमियोलॉजी एंड कम्युनिटी हेल्थ, 71(3), 269-274।

6. मनचंदा, एस., सैकिया, बी., गुप्ता, एन., चौधरी, एस., और पुलियेल, जे.एम. (2011)। भारत में जन्म के समय लिंग अनुपात, जन्म क्रम से इसका संबंध, पिछले बच्चों का लिंग और स्वदेशी चिकित्सा का उपयोग। पीएलओएस वन, 6(6), ई20097।

7. जियांग, क्यू., यू, क्यू., यांग, एस., और सांचेज़-बैरीकार्टे, जे.जे. (2014)। चीन में जन्म के समय लिंगानुपात में परिवर्तन: जन्म क्रम के अनुसार एक अपघटन। जर्नल ऑफ बायोसोशल साइंस, 49(6), 826-841।

8. बकविन, एच. (2009)। शिशु मृत्यु दर में लिंग कारक. मानव जीवविज्ञान, 1(1), 90.

9. सॉयर, सी.सी. (2012)। बाल मृत्यु दर अनुमान: 1970 के दशक से बाल मृत्यु दर में लिंग अंतर का अनुमान लगाना। पीएलओएस मेडिसिन, 9(8), ई1001287।

10. फ्लेशर, बी., कुलोविच, एम.वी., हॉलमैन, एम.आई.के.के.ओ., और ग्लक, एल.ओ.यू.आई.एस. (2012)। फेफड़े की प्रोफ़ाइल: सामान्य गर्भावस्था में लिंग अंतर। प्रसूति एवं स्त्री रोग, 66(3), 327-330।

11. डिपिएत्रो, जे.ए., और वोएग्टलाइन, के.एम. (2016)। विकास और भेद्यता में लिंग अंतर का गर्भकालीन आधार। तंत्रिका विज्ञान, 342, 4-20.

12. टाउनसेल, सी.डी., एम्मर, एस.एफ., कैंपबेल, डब्ल्यू.ए., और हुसैन, एन. (2013)। समयपूर्व नवजात शिशुओं की श्वसन रुग्णता और मृत्यु दर में लिंग अंतर। बाल चिकित्सा में फ्रंटियर्स, 5, 6।

13. गिफिंग-क्रॉल, सी., बर्जर, पी., लेपरडिंगर, जी., और ग्रुबेक-लोबेनस्टीन, बी. (2015)। लिंग और उम्र प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया, संक्रमण के प्रति संवेदनशीलता और टीकाकरण के प्रति प्रतिक्रिया को कैसे प्रभावित करते हैं। एजिंग सेल, 14(3), 309-321।

14. गिल्मोटो, सी. ज़ेड (2007)। एशिया में लिंगानुपात असंतुलन: रुझान, परिणाम और नीति प्रतिक्रियाएँ। पेरिस: एलपीईडी/आईआरडी।

15. हडसन, वी.एम., और डेन बोअर, ए. (2005)। गुमशुदा महिलाएँ और नंगी शाखाएँ: लिंग संतुलन और संघर्ष। पर्यावरण परिवर्तन और सुरक्षा कार्यक्रम रिपोर्ट, (11), 20-24।